अध्याय–चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.0 भूमिका

4.1 परिकल्पनाओं का विवरण

अध्याय चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण

4.0 भूमिका –

सांख्यिकीय विधियां – विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण के मुख्य उद्देश्य को पुरा करती है। सांख्यिकीय का उपयोग हम प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर उनसे परिणाम प्राप्त करने हेतु करते हैं। विश्लेषित अभ्यास करके उससे परिणाम प्राप्त कर प्रदत्तों का सहीं उपयोग किया जाता है। यह अध्ययन का एक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि इससे प्रदत्तों का सही महत्व जाना जा सकता है।

व्याख्या के द्वारा हम एकत्रित प्रदत्तों का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में कर सकते हैं। सांख्यिकी एकत्रित प्रदत्तों की उपयोगिता उसकी सही व्याख्या पर निर्भर होती है। संख्यात्मक प्रदत्तों का एकत्रीकरण, संगठित विश्लेषण एवं व्याख्या गणितीय प्रविधियों द्वारा करने की क्रिया को सांख्यिकी कहा जाता है। संशोधन द्वारा हमें संख्यात्मक प्रदत्त प्राप्त होते हैं। अतः मापन एवं मूल्यांकन के लिए सांख्यिकीय को मुख्य साधन माना जाता है। संख्यात्मक प्रदत्तों का स्पष्टीकरण करने हेतु सांख्यिकीय शब्द का प्रयोग किया जाता है। विभिन्न व्यक्तिगत निरीक्षणों द्वारा समूह व्यवहार अथवा समूह गुणधर्मो का स्पष्टीकरण करके उनका सामान्यीकरण सांख्यिकीय द्वारा किया जाता हैं। प्रस्तुत अध्ययन के उददेश्य को ध्यान में रखते हुए प्रदत्तों को एकत्रित किया गया है एवें उनकी व्याख्या की गई है।

4.1 परिकल्पनाओं का विवरण –

प्रदत्तों का विश्लेषण परिकल्पनाओं के अनुसार है।

परिकल्पना :– 1

"कक्षा– 8वीं के शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।"

तालिका क्रमांक 4.1

शहरी विद्यार्थियों की अधिगमशैली और उपलब्धि का प्रमाण

आवृति	चर	सहसंबंध
N=50	1) अधिगमशैली 2) उपलब्धि	0.33

❖ **स्पष्टीकरण :–**

यहा सह संबंध 0.33 आया है।स्वाधिनता मात्रा (df) 48 के लिये 0.05 स्तर पर तालिका मुल्य 0.29 है, जो 0.33 से कम है। यह मुल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

प्रथम परिकल्पना में अधिगम 'शैली और उपलब्धि में सार्थक संबंध है।

परिकल्पना :– 2

"कक्षा– 8वीं के ग्रामीण विद्यार्थीयों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।"

तालिका क्रमांक 4.2

ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली और उपलब्धि का प्रमाण

आवृति	चर	सहसंबंध
N=50	1) अधिगमशैली 2) उपलब्धि	–0.11

❖ **स्पष्टीकरण :–**

यहा सह संबंध –0.11 आया है। स्वाधिनता मात्रा (df) 48 के लिये 0.05 स्तर पर तालिका मुल्य 0.29 है, जो –0.11 से ज्यादा है। यह मुल्य 0.05 स्तर पर असार्थक है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

इस परिकल्पना में अधिगमशैली और उपलब्धि में सार्थक संबंध नहीं है।

परिकल्पना :– 3

"कक्षा– 8वीं के विद्यार्थियों की अधिगमशैली और उपलब्धि के बीच में कोई सार्थक संबंध नहीं है।"

तालिका क्रमांक 4.3

विद्यार्थियों की अधिगम शैली और उपलब्धि का प्रमाण

आवृति	चर	सहसंबंध
N=100	1) अधिगमशैली 2) उपलब्धि	0.15

❖ **स्पष्टीकरण :–**

यहा सह संबंध 0.15 आया है। स्वाधिनता मात्रा (df) 98 के लिये 0.05 स्तर पर तालिका मुल्य 0.21 है, जो 0.15 से ज्यादा है। यह मुल्य 0.05 स्तर पर असार्थक है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

इस परिकल्पना में अधिगमशैली और उपलब्धि में सार्थक संबंध नहीं है।

उद्देश्य – 1

"कक्षा–8वीं के विद्यार्थियों की अधिगम शैली और उपलब्धि के बीच में कोई अंतर नहीं है।"

अध्ययन का यह सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है। कोई भी युग्म संबंध एक दूसरे पर निर्भर होते है। किसी एक उद्देश्य को जाँचने के लिये शोधकर्ता ने 100 विद्यार्थियों की अधिगम शैली को परीक्षण के द्वारा ज्ञात किया।

मूर्त अनुभवों से सीखने वाले 25 विद्यार्थी, प्रत्यक्ष निरीक्षण से सीखने वाले 11 विद्यार्थी अमूर्त कल्पना से सीखने वाले 34 विद्यार्थी, तथा सक्रिय प्रयोग से सीखने वाले 30 विद्यार्थी चार ग्रुप में प्रतिदर्श प्राप्तांक के रूप में मिले।

विद्यार्थियों की उपलब्धि का प्रमाण कक्षा–7वीं के वार्षिक परिणाम शालेय रिकार्ड से लिया गया। जिसका प्रतिशत निकाला गया। मूर्त अनुभवों से सीखने वाले 25 विद्यार्थियों का उपलब्धि प्रमाण 66.05% मिला, प्रत्यक्ष निरीक्षण से सीखने वाले 11 विद्यार्थियों का उपलब्धि प्रमाण 65.92% मिला, अमूर्त कल्पना से सीखने वाले 34 छात्रों का उपलब्धि प्रमाण 60. 31% मिला, जबकि सक्रिय प्रयोग से सीखने वाले प्राप्तांको के साथ अधिगम शैली को जोड़ा गया। दोनों की तुलना करने के बाद जो ऑकड़े प्राप्त हुये वह निम्नलिखित तालिका में दिये गये है –

तालिका क्रमांक– 4.4

अधिगम शैली और उपलब्धि का प्रमाण

अधिगम शैली	विद्यार्थी संख्या	उपलब्धि का प्रमाण
मूर्त अनुभवों से	25	60.05%
प्रत्यक्ष निरीक्षण से	11	65.92%
अमूर्त कल्पना से	34	60.31%
सक्रिय प्रयोग से	30	65.20%

तालिका में निर्दिष्ट ऑकड़ों के अनुसार सबसे अधिक 34 विद्यार्थियों की अधिगम शैली अमूर्त कल्पना से सीखना हो और इन विद्यार्थियों का उपलब्धि प्रमाण 60.31% है, जो सबसे निम्न प्रमाण हैं। द्वितीय सबसे अधिक पसंदीदा अधिगम शैली 'सक्रिय प्रयोग से' सीखना है जो 30 विद्यार्थियों की शैली है, इन विद्यार्थियों का उपलब्धि प्रमाण 65.20% है, जो निम्न से अधिक है। प्रत्यक्ष निरीक्षण से सीखने वाले 11 विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रमाण 65.92% है, जो मध्यम से अधिक है। मूर्त अनुभवों से सीखने वाले 25 विद्यार्थियों को उपलब्धि प्रमाण 66.05% है, जो सबसे उच्च प्रमाण है।

तालिका में निर्दिष्ट आंकड़ों से यह ज्ञात होता है कि जिस अधिगम शैली सबसे अधिक विद्यार्थियों द्वारा अपनाया गया है उनमें उपलब्धि का प्रमाण कम है जबकि जो कम अपनाई गई है उसमें उपलब्धि ज्यादा है। अतः शिक्षकों द्वारा अधिगम शैली को पहचान कर उसके अनुरूप शिक्षा देनी चाहिए।